KIRANODAY ENTERPRISES

SUPER MARKET

PRINTING PRESS

STATIONARY

KE GARMENTS

SPORTS ITEMS

School Diary
Prospectus
ID Cards
Certificates
Screen Printing
Mementos
Trophies
Medals
Visiting Cards
Letterhead
Rubber Stamps
Offset Printing
Note Books & Stationary
T-Shirt Printing, etc.

ONE SPOT MANY SOLUTION

सस्ते मे मस्त

मेन रोड, नगर परिषद के आगे, बिशप होम,
बल्लारपूर - ४४२ ७०१

जीवधारा

Vol. 3 : 2024

हे संत वियानी पुरोहितों के लिए प्रार्थना कर

बालकसंघ, चांदा धर्मप्रान्त

ग्रीगरी IX ने 30 मई 1232 को इटली के स्पोलेटो में अंथोनी ऑफ पादुवा को संत घोषित किया। उनके उपदेश की आध्यात्मिक समृद्धि को ध्यान में रखते हुए, पोप पायस XII ने 16 जनवरी 1946 को संत अंथोनी को कलीसिया का महान पंडित / डॉक्टर घोषित किया।

बाईबल क्वीज (इसायाह १-५)

1. विश्व मण्डल के प्रभू ने हमे बचाया नही होता तो हम किसके जैसे मर जाते?
2. प्रभू किसका रक्त नही चाहता?
3. प्रभू के मार्ग और पथ चलते रहने से कैसी शिक्षा प्रकट होगी?
4. मनुश्य पुजा के लिए सोने–चाँदी की बनाई देवमुर्तियाँ किसके फेंग देगें?
5. प्रभू उनके (स्त्रियों) के कौन–कौन से आभूशण छीन लेगें?
6. सौदर्य के बदले में कौनसा दाग मिलेगा?
7. जिनका नाम जीवन–ग्रन्थ में लिखे है उन्हे क्या कहते है?
8. येरूसालेम से बहाया हुआ रक्त किसको धो डालेगा?
9. किसका सर्वनाश किया जायेगा?
10 येरूसालेम और युदा से प्रभू क्या छीनने वाला है?

(इसायाह नबी के ग्रन्थ 1–5 तक पढीयें और उत्तर लिखकर धर्मशिक्षण कार्यालय में 30 ऑगस्ट के पहले भेजीये। विजेता को पुरस्कार दिया जाएगा।)

मेरे प्यारे बच्चों,

बालक येशु के नाम पर,

आप सभी को जय येशू

इस दुनिया में जहाँ हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि तुम्हें ईश्वर से बहुत प्यार है। वह हर एक को अपने नाम से जानता है और तुम्हारे लिए एक बेहतरीन योजना रची है। येशु मसीह के माध्यम से, हमें ईश्वर के अद्वितीय प्रेम और क्षमा की उपहार की जानकारी मिलती है। यह उस संदेश की तरह है जिसे हम हमेशा अपने दिल में रख सकते हैं।

जैसे–जैसे तुम बड़े होते जाओ, याद रखो कि ईश्वर हमेशा तुम्हारे साथ हैं, तुम्हें मार्गदर्शन और संरक्षण देने के लिए तैयार है। बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना, ये तुम्हारे विश्वास को मजबूत करने और उसके शिक्षाओं को समझने के तरीके हैं। मेरे प्यारे दोस्तों, हिम्मत रखो और ईश्वर के प्रेम की ज्योंति में चलो। दूसरों के प्रति दयालु रहो और हमेशा उस पर विश्वास करो। तुम उसकी नजरों में मूल्यवान हो, और उसके पास हर एक के लिए अद्भुत योजनाएं हैं।

प्यार और आशीर्वाद के साथ,

फा. विवेक पुत्तनपुरयिल
निर्देषक, धर्मशिक्षा विभाग
चांदा धर्मप्रांत

गरीब की उडान

एक छोटे से गाँव में 'लक्ष्मी' नाम की एक औरत रहती थी। उसका राजू नामक एक बेटा भी था, जो कि पढ़ाई में बहुत होशियार था। लक्ष्मी के पति के गुजर जाने के बाद सारी जिम्मेदारियाँ लक्ष्मीबाई के कंधों पर आ गई थी। वह किसी के घर में बर्तन मांजती, तो किसी के घर में खाना बनाती थी। उसका बेटा भी उसके साथ ही जाया करता था। वहाँ बैठे–बैठे वह अखबार पढ़ता था। एक दिन जब वह अखबार पढ रहा था, तो मालकीन आकर बोली, ''अरे राजू! अखबार पढ़ने से तू कौनसा बडा अफसर बन जायेगा? जाकर अपनी माँ का हाथ बटा।'' राजू बोला, ''मालकीन मैं बडा अफसर बनना चाहता हूँ। हम किताबे नही खरीद सकते इसलिए यह अखबार पढकर जानकारी प्राप्त कर रहा हूँ।'' मालकीन जोर–जोर से हँसने लगी। यह देख लक्ष्मी अपने बेटे को लेकर घर चली गई।

उसके बाद लक्ष्मीबाई ने शादियों में रोटी बनाने के ऑर्डर का काम शुरू कर दिया। वह सुबह 3 बजे उठकर 15 से 20 किलो कि रोटियाँ बनाती थीं और राजू भी सुबह उठकर अपनी माँ का हाथ बटाता था और फिर पढ़ने बैठ जाता था। एक दिन उसके घर मे मकान मालिक आए और बोले, ''क्या लक्ष्मीबाई तुमतो 3 बजे ही सुबह उठ जाती हो और बिजली जला लेती हो या तो बिजली का बिल भरो, या यह कमरा छोड दो।'' यह बोलकर मालिक गुस्से में चला

जिसने पढ़ाई छोड़ दी थी, अंथोनी की किताब अपने साथ ले गया था। अंथोनी ने यह जाने बिना कि उसने किताब कैसे खो दी, उसे ढूंढ़ने के लिए प्रार्थना की। बाद में, पूर्व नौसिखिए ने किताब अंथोनी को लौटा दी।

चित्रकारों ने संत अंथोनी को एक खुली बाइबिल पर सफेद लिली और शिशु यीशु को पकड़े हुए चित्रित किया है। सफ़ेद लिली उसकी पवित्रता का प्रतीक है, और बाइबल परमेश्वर के वचन के प्रति उसके प्रेम का प्रतीक है। संत अंथोनी के साथ शिशु यीशु की उपस्थिति अजीब है क्योंकि अंथोनी का जन्म यीशु के सदियों बाद हुआ था। पवित्र परिवार की तस्वीर के अलावा, संत अंथोनी एकमात्र ऐसे संत हैं जिन्हें शिशु यीशु को गोद में लिए हुए दर्शाया गया है। इसका कारण अंथोनी को शिशु यीशु का एक दर्शन था जब वह एक दोस्त के घर पर अकेले प्रार्थना कर रहा था। घर के मेज़बान ने प्रार्थना के दौरान अंथोनी को शिशु यीशु के साथ बातचीत करते हुए पाया। अंथोनी ने मेज़बान से अनुरोध किया कि उसकी मृत्यु तक इसे गुप्त रखा जाए।

कैम्पोसैम्पिएरो में ध्यान साधना के बाद पादुआ लौटते समय, 13 जून 1231 को, 35 वर्ष की छोटी उम्र में, अंथोनी की मृत्यु हो गई। उनके अनुरोध का सम्मान करते हुए, भिक्षुओं ने अंथोनी को सांता मारिया मेटर डोमिनी के एक छोटे से चर्च में दफनाया। भिक्षुओं ने बाद में 1301 में इसके ऊपर एक बड़ा महागिरजा घर / बेसिलिका बनवाया। धर्मिक पंडितों के अनुसार जब अंथोनी की मृत्यु हुई, तो बच्चे सड़कों पर रोने लगे और चर्च की घंटियाँ अपने आप बज उठीं। उनकी मृत्यु के 30 साल बाद जब उनका शव निकाला गया तो उनकी जीभ अविनाशी और गीली पाई गई। कलीसिया इसे उपदेश देने के लिए उनके ईश्वर प्रदत्त उपहार के संकेत के रूप में देखता है। उनकी जीभ, जबड़ा और स्वर रज्जु अभी भी पादुआ में संत अंथोनी के बेसिलिका/महागिरजा घर में प्रदर्शित हैं। पोप

पादुआ के संत अंथोनी

परिचय : संत अंथोनी कैथोलिक चर्च में एक लोकप्रिय संत हैं। व्यक्ति, चर्च और संस्थाएँ उन्हें अपना संरक्षक संत मानकर श्रद्धापूर्वक उनका नाम अपनाते हैं। लोग कई जरूरतों के लिए उनकी मध्यस्थता चाहते हैं, खासकर खोई हुई वस्तुओं को पाने के लिए। इस संत की प्रमुख विशेषताएँ उनका गरीबों के प्रति प्रेम, दान का संदेश, बाइबल अध्ययन के प्रति उत्साह और ईश्वर के वचन का प्रचार करना था।

संत अंथोनी की जीवनी : अंथोनी का जन्म 15 अगस्त 1195 को पुर्तगाल के लिस्बन में एक धनी परिवार में हुआ था और उनकी मृत्यु 13 जून 1231 को इटली के पादुआ में हुई थी। उनके माता–पिता विसेंट मार्टिस और तेरेसा पेस तवेरा थे। अंथोनी का पूर्व नाम फर्नांडो मार्टिस था। उनके माता–पिता ने उन्हें स्थानीय कैथेड्रल स्कूल में पढ़ाया। जब वे 15 वर्ष के थे, तब वे लिस्बन में ऑगस्टिनियन धार्मिक समुदाय में शामिल हो गये। पुरोहित बनने के बाद, कोइम्ब्रा में सेवा करते समय, फर्नांडो की मुलाकात कोइम्ब्रा के बाहर बसे फ्रांसिस्कन भिक्षुओं से हुई। उनकी सरल और ईसाई जीवनशैली ने फर्नांडो को आकर्षित किया।

अंथनी के जीवन की एक घटना खोई या चोरी हुई वस्तुओं के संरक्षक के रूप में उनकी लोकप्रियता का कारण थी। अंथोनी के पास भजनों की एक पुस्तक थी जिसे वह बहुत महत्व देता था क्योंकि इसमें शिक्षण के लिए नोट्स और टिप्पणियाँ लिखी हुई थीं। उन दिनों, किताबें मूल्यवान थीं क्योंकि प्रतियां हस्तलिखित होती थीं और मुद्रित नहीं होती थीं। एक नौसिखिया

जाता हैं। फिर राजू लालटेन लगाकर पढ़ाई करने लगा और लक्ष्मी बाई भी उसी में गुजारा करने लगी। ऐसे ही कई सालो तक राजू पढ़ता रहा और हमेशा अव्वल नंबर लाने लगा। राजू की लगन देखकर उसके गुरू जी ने उसे दिल्ली जाने की सलाह दीं और खर्चा भी खुद उठाने की जिम्मेंदारी लीं।

राजू दिल्ली जाकर पढ़ाई करने लगा और जब वह परिक्षा देने जा रहा था।, तब उसे एक गाडी टक्कर मार देती है। उसके सिर पर और बाए हाथ पर चोट लग जाती है। वह दाए हाथ से लिखने का निर्णय लेकर, बाए हाथ के बिना दाए हाथ से लिखने की कोशीश करने लगता हैं। वह अपने पूरे साल को बरबाद होने से बचाकर परिक्षा देनेके लिए निकलता हैं। वहाँ जाकर उसने परिक्षा दीं और फिर बाद में अस्पताल जाकर अपना इलाज कराया । राजू ने वहाँ भी अपनी पढ़ाई जारी रखी और इंटरव्यू दिया। इंटरव्यू देने के बाद वह अपने गाँव वापिस लौट आ जाता है

थोडे दिन बाद उसकी माँ अखबार खरीद लाती है। और राजू को अपना परिणाम देखने को कहती हैं। राजू खुश होकर बोलता हैं, माँ! मैं पास हो गया। मैं अफसर बन गया।'' उन दोनों की आँखो में आँसू आ गए। वे दोनो अब खुशी–खुशी से जिवन बिताने लगे।

– दिव्या एस.

दुनिया चाहे हम पर हँसे, मजाक उडाए लेकिन हमें शातं रहते हुए कभी हिम्मत नही हारनी चाहिए और हमेशा अपने लक्ष्य पर ध्यान देकर जीत हासिल करनी होती हैं। चाहे कुछ भी हो जाए हमेशा मेहनत करनी चाहिए।

एक बार कि बात है। गुरूकूल में तीन शिष्यो ने अपनी पढाई पूरी करने पर अपने गुरूजी से पुछा की उन्हे गुरू दक्षिणा मे क्या चाहिये?

गुरूजी थोडा मुस्कुराये और बडे प्यार से कहने लगे, मुझे तुमसे गुरू दक्षिणा में एक बोरा भरके सुखी पत्तियॉ चाहिए। ला सकोगे? वे तीनो बहुत खुश हुये सोचने लगे कि सुखी पत्तीयॉ तो जंगल में कही भी पडी रहती है। हम आसानी से ला सकेगें। ऐसा गुरूजी से कहकर वे जंगल की ओर निकल गये।

अब वे तीनों शिष्य जंगल में पहुॅच गयें और देखा कि वहॉ तो सुखी पत्तियॉ सिर्फ एक मुट्ठीभर ही थी। उनके आश्चर्य का ठिकाना नही रहा। वे सोचने लगे कि आखिर कौन जगंल से सुखी पत्तीयॉ उठाकर ले गया होगा?

इतने मे ही उन्हे दूर से आता हुआ एक किसान दिखाई दिया। वे तीनो किसान से प्रार्थना करने लगे कि कृपया करके हमे एक–एक बोरा सुखी पत्तियाँ दे। किसान ने उनसे कहॉ, 'मैने तो सारी सुखी पत्तियोंका पहले ही ईंधन के रूप में उपयोग कर लिया है। अब तीनों पास ही बसे एक गांव की ओर इस आशा से निकल गये की वहॉ उन्हे सुखी पत्तियॉ मिल जाये। वहॉ पहुॅचकर उन्होने एक व्यापारी को देखा और उस व्यापारी के पास जाकर बोले,'कृपया करके हमे एक–एक बोरा सुखी पत्तियॉ दे दिजीए। व्यापरी ने कहॉ, मैने तो पहले ही सुखी पत्तियों के दोने बनाकर बेच दिए है लेकिन उस व्यापारी ने उन्हे एक बुढी मॉ का पता दिया, जो सुखी पत्तीयॉ जमा किया करती है।

क्या तुम्हें ईसा को देखना है? तब तो यह छोटी प्रार्थना बडे विश्वास के साथ रटो। धन्य हैं, वे जिनका हृदय निर्मल है, वे ईश्वर के दर्शन करेगें (मत्ती 5:8)।

ईसा का पवित्र रक्त सौख्यदायक हैं। आन नामक युवती की बहिन लिनी की स्तन पर टयूमर होने का पता चला। खबर पाते ही आन उसके प्रति ईसा के पवित्र रक्त के अभिषेक की प्रार्थना करने लगी। एक दिन आन, लिनी और एक सहेली ने मिल कर पवित्र रक्त के अभिषेक की प्रार्थना की। उस समय उन्हें एक दर्शन मिला कि स्तन के टयूमर को पवित्र रक्त से धोया जाता है और चंगाई मिलती है। वे पूरी खूशी के साथ ईसा की स्तुती करने लगी। ईसा ने लिनी को चमत्कारी ढंग से चंगा किया।

मृत्यू के बाद भी ईसा ने चमत्कार किया, जो अपने पवित्र खून के द्वारा किया। ईसा मर चुके हैं, इसे पक्का समझने के उद्देश से एक सैनिक ईसा की बगल में भाले से वार किया, तो तुरन्त वहाँ से पानी और खून निकला, उसे अन्धे की शक्ति मिली। रोगातुर शरीर को आप के पवित्र रक्त से धोन के लिए सौंपे, और विश्वास के साथ प्रार्थना करें तो शरीरिक और मानसिक चंगाई जरूर मिलेगी।

बच्चों, पवित्र रक्त हमें पवित्र बनाता है, चंगा करता है यही नही हमें धर्मी बनाता है। वह हमारी रक्षा करेगा। वह हमारे लिए मध्यस्थता करेगा, प्राण देगा, मुक्ति देगा, साथ सशक्त सुरक्षा प्रदान करेगा।

यीशु हमें क्रूस देकर अपना प्रेम दिखाते हैं। वह केवल उन्हीं को क्रूस और दुःख भेजता है जिनसे वह प्रेम करता है।

– संत अल्फोंसा

पवित्र रक्त अमुल्य है

1849 में ईटली में स्वतंत्रता संघर्श चल रहा था, पोप पीयूस नवें को पलायन कर छिप जाना पडा। ईसा के पवित्र रक्त के सन्यास समाज का सुपीरियर जनरल रहा फा. जोण जियोवानी मेललिनी भी पोप के साथ जा चुके थे। युद्ध के अन्त का समय निकट आया। युद्ध की समाप्ति के लिए ईसा के पवित्र रक्त की मध्यस्थता माँग कर प्रार्थना करने और युद्ध के समाप्त होने पर कलीसिया भर में ईसा के पवित्र रक्त का पर्व मनाने की मन्नत करने के बारे मे फा. जियोवानी ने पोप से कहा। पोप ने तुरन्त ईसा के पवित्र रक्त की मध्यस्थता में प्रार्थना की और जल्दी ही गृहयुद्ध समाप्त हो गया। पोप अगले– जुलाई में ही पवित्र रक्त का पर्व कलीसिया भर में मनाने की घोशणा भी की।

प्यारे बच्चो! ईसा का पवित्र रक्त अनमोल हैं। अतः ईसा के पवित्र रक्त के बारे में गहरा ज्ञान, चेतना और विश्वास होना चाहिए। ईसा ने हमें जो प्रार्थना सिखायी उसे तीन बजे को रटने की याद दिलाते है, (संत फौस्तीना के माध्यम से) प्रभु के पवित्र हृदय से, हमारे लिए बहते पवित्र रक्त और जल इस करूणा स्त्रोत पर हम अपना आश्रय रखते है।

ईसा के पवित्र रक्त की शक्ति बहुत बडी है। हमारे गुनाहों से मुक्ति के लिए यह रक्त बहाया गया हैं। इसलिए ईसा का पवित्र खून हमें पवित्र बनाएगा, आँखे मूँद कर इस भावना में देखें कि ईसा का पवित्र खून हमारे दिलों को धो रहा है और धीरे–धीरे हमे यह प्रार्थना रटें, मेरे ईश्वर! मेरे दिल, ख्यालों और यादों को अपने पवित्र रक्त से धोकर शुद्ध बनाएँ। इस प्रकार प्रार्थना करके देख लों, तुम जरूर चमत्कार देखोगे। बच्चों! क्या तुम ईसा को देखा करते हो?

अब वे तीनो उस बुढी मॉ के पास पहूँचकर प्रार्थना करने लगे, कृपया करके हमे एक–एक बोरा सुखी पत्तीयॉ दे, हमे अपने गुरूजी को गुरू दक्षिणा देनी है।

वह बुढी मॉ अलग–अलग दवाईयॉ सूखी पत्तियॉ का अब निराश होकर वे गुरूकुल लौट आये। ही प्यार से पूछॉ, 'पुत्रो, बोली, बेटा! मैने तो बनाने के लिये सभी उपयोग कर लिया है। तीनो खाली हाथ ही गुरूजी ने उन्हें देखते ले आये गुरू दक्षिणा? तीनो सर झुका के कहने लगे 'गुरूदेव हम आपकी इच्छा पूरी नही कर पाये। हमने सोचा था कि सुखी पत्तीयॉ तो जंगल में बडी आसानी से मिल जायेगीं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि लोग सुखी पत्तीयॉ का भी तरह–तरह से उपयोग करते है।

गुरूजी ने फिर मुस्कुराते हुये प्रेमपूर्वक कहॉ, निराश क्यों होते हो खुश हो जाओ और यही ज्ञान की सुखी पत्तियॉ' बेकार नही हुआ करती, बल्की उनके भी अनेक उपयोग हुआ करते है। मुझे अपना ज्ञान गुरू दक्षिणा के रूप मे दे दो। तीनों शिश्य अपने गुरूजी को प्रणाम करके खुशी–खुशी अपने अपने घर की ओर चले गये।

कहानी का संदेश

- दुनिया में हर छोटी–बडी चीजों का अपना अपना एक महत्व और एक उपयोग है।
- जो चीज हमारे लिये अनुपयोगी हो, मगर हो सकता है किसी के लिये बहुत उपयोगी हो।
- जब सुखी पत्तीयॉ निरर्थक या बेकार नही होती, तो फिर हम कैसे किसी व्यक्ति या वस्तु को छोटा और महत्वहीन कर सकते है?

लडका और बिछुआ

एक बार कि बात है, एक जवान लड़का था। वह एक खुशमिजाज और मस्ती करने वाला बच्चा था। वह एक आज्ञाकारी भी बच्चा था उसकी मॉ उसे प्यार करती थी। एक दिन जब लड़का मैदान में खेल रहा था। अचानक उसे बिछुआ ने काट लिया। वह घायल होकर घर की ओर भागा। अपनी माँ से मिलने पर उसने कहा की उसे एक छोटे से बिछुआ ने काट लिया है।

उसकी मॉ ने कहा, ''मेरा सुझाव है कि अगली बार जब आप बिछुआ को अपने हाथ में पकड़ें तो उसे मजबुती से पकड़ें। यदि आप इसे जोर से पकड़ेंगे तो यह आपको कभी नुकसान नही पहुंचाएगा''। आप जो भी करें, साहसपूर्वक करे।

शिक्षा :– आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है।

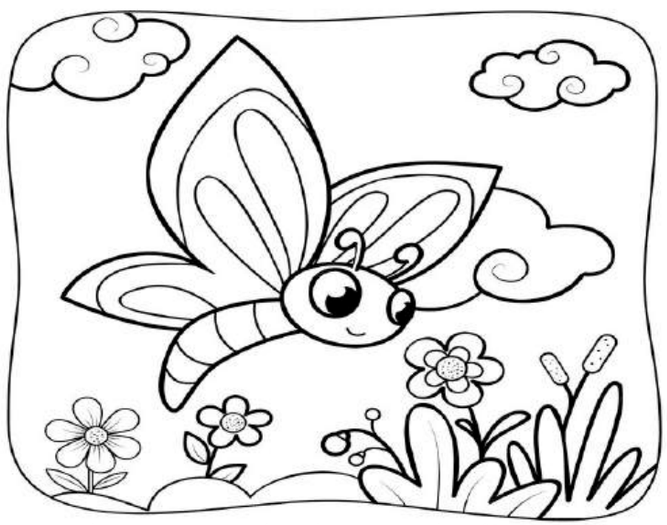

एक से चार कक्षा तक के बच्चे कलर करके धर्मशिक्षण कार्यालय में 30 ऑगस्ट के पहले जमा करे। विजेता को पुरस्कार दिया जाएगा।

दूर्भाग्य से जब हम अपने लक्ष्य की ओर बढते है तो हतोत्साहित करने वाले शब्द आम हो जाते है। लोग हमारी आलोचना कर सकते है और हमे हमारे रास्ते से हटाने की कोशिश कर सकते है इन शब्दो का प्रथाओं और विश्वासो पर प्रभाव महत्तवपूर्ण है यदि हम प्रोत्साहन वाले शब्दो पर ध्यान दे तो और आगे बढ़ सकते है यदी हम नकात्मक प्रतिक्रिया और आलोचना पर ध्यान केंद्रित करते है तो हम प्रगति करना बंद कर सकते है और हार मान सकते है, क्या सुनना है इसका चुनाव महत्वपूर्ण है। इस कहानी में इस खूबसूरती को चित्रित किया गया है, एक मेढंक ने हतोत्साहित करने वाले शब्दों से प्रभावित होकर हार मान ली और दूसरा मेढंक जो बहरा भ्रमित था, ऊपर से रोने की आवाजे प्रोत्साहन को जय–जयकार करने वाली थी यह विश्वास, उसे प्रयास करते रहने के लिए प्रेरित करता है। जब तक वह सफल नही हुआ विश्वास की शक्ति प्रदर्शित करता है हम अपनी वास्तविकता को आकार दे सकते है, यदि हम मानते है कि हम सक्षम है हम आत्मविश्वास के साथ कार्य करते है और चुनौतियो पर विजय प्राप्त करते है, दूसरी ओर मुझे अपने क्षमताओं पर संदेह है यदि हम सक्षम नही है तो हम गिर सकते है इसलिए यह महत्वपूर्ण है की हम अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें। हमारी क्षमताओं पर विश्वास करे और नकारात्मक को नजर अंदाज करे ताकि हम आगे बढ सकें यह दृष्टिकोण हमे चुनौतियो से निपटने की ताकत खोजने में मदद करता है और वह हासिल करे जो दूसरो को असंभव लगे।

अपने जीवन में हार मत मानो

एक बार एक खुबसूरत जगह पर जंगल में मेढंको का समूह था। वो समूह विशाल तालाब में रहता था। एक दिन उन्होंने जंगल का सफर करने का फैसला किया। अचानक यह हुआ कि उनमे से दो मेढंक एक गहरे गड्डे मे गिर गए जब दूसरे मेढंको ने देखा कि गड्डा बहूत गहरा है तो ऊपर खडे सभी मेढंक चिल्लाने लगे तुम दोनो इस गड्ढे से नही निकल सकते गड्ढा बहूत गहरा है तुम दोनों इसमे से निकलने की उम्मींद छोड दो उन दोनों मेंढकों ने गड्ढे से निकलने के लिए लगातार उछलते रहे और बाहर खडे मेंढकों ने लगातार कहते रहे कि तुम दोनो बेकार मेहनत कर रहे हो तुम दोनो को हार मान लेनी चाहिए तुम नही निकल सकते। गड्ढे में गिरे दोनो मेढंको में से एक मेढंक ने ऊपर खडे मेढको की बात सुनी ली और उछलना छोडकर निराश होकर एक कोने में बैठ गया, दूसरे मेढंक ने प्रयास जारी रखा। वो उछलता रहा जितना वह उछल सकता था। बाहर खडे सभी मेढंक लगातर कह रहे थे। तुम्हे हार मान लेनी चाहिए पर वह मेढंक शायद उनकी बात नही सुन पा रहा था और उछलता रहा और काफी कोशिशों के बाद वो बहार आ गया। दूसरे मेढंको ने कहा क्या तुमने हमारी बात सूनी तो उस मेढंक ने इशारा करके बताया कि वे उनकी बात नही सुन सकता । क्योंकि वह बहरा है सुन ही नही सकता इसलिए वह किसी की बात नही सुन पाया और यही समझ रहा था कि सभी उसका उत्साह बढा रहे है।

यदी हम कर्तव्यनिश्ठ जीवन पर विचार करे तो हम पाऐंगे कि जैसे–जैसे हम अपने लक्ष्यों की ओर काम करते है, हम अकसर आसपास के लोगों से दो प्रकार की आवाजे सुनते है। एक जो हमे प्रोत्साहित करती है, और दूसरी जो हमे हतोत्साहित करती है।

माँ, इस शब्द में कितना मिठास और अपनापन है, माँ की ममता भरा दिल को जानते है। माँ अपने बच्चो के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाती है। मैं एक माँ, मेरी दास्तान आप सभी के सामने प्रस्तुत कर रही हूँ। शायद इस माँ की कहानी से हम अपने जीवन में कुछ बदलाव तथा सीखने की कोशीश करे। माँ अपने बेटे के लिए किस हद तक क्या–क्या कर सकती है इस कहानी से सुनेगे।

''एक अन्धी माँ रहती है अपने सारे दुःखो को छिपा कर अपने बेटे के लिए खुशी के साथ उसकी देखभाल करती है। बेटे को लेकर काम पर जाती है खूब मेहनत करती है ताकि अपने बेटे को अच्छी शिक्षा दे सके और पढ़ा लिखाकर उसे बहुत बड़ा व्यक्ति बना सके यही सोच रखते हुए वह अपने बेटे का पालन पोशण करती है, और उसे खुप पढ़ाती है और वह पढ लिखकर बड़ा आदमी बन जाता है। जब वह बड़ा आदमी बनने के बाद, माँ उसे कभी यह एहसास नही दिलाती कि उसने उसके लिए क्या क्या किया। बेटा दुसरे शहर जाकर नौकरी करने लगता है, खूब पैसा कमाने लगता है वह अपने जीवन में दोस्तो के साथ खुशी–खुशी जीवन बिताता है और वह अपनी माँ को भूल जाता है अपनी माँ को कभी मिलने नही आता न उसके बारे में सोचता है उसकी माँ बहूत बिमार हो जाती वह अपने बेटे को देखने के लिए तरसती है, किन्तु वह नही आता, फिर भी माँ सिर्फ इंतजार करते करते मर जाती है। माँ मरने के पहले, एक खत लिखती है कि बेटा मै बहोत अभागन

माँ हूँ, तु जब छोटा था तो तेरा एक्सीडेन्ट हुआ और उस एक्सीडेन्ट में तुम्हारी आँखे चली गयी तो मुझे ऐसा लगा इस आँख की जरूरत मेरे बेटे को है इसलिए मैंने यह आँख तुझे देदी बेटा'' माँ के मरने के कुछ दिन बाद वह घर आया तो उसकी माँ इस दुनिया में नही थी पर जब वह घर के अदंर गया तो टेबल पर एक चिठ्ठी पड़ी मिली। तब उसे पता चला कि वह आज जिस आँख से दुनिया देख रहा है वह मेरी खुद की आँख नही बल्की मुझे दान में मिली है।

हम कभी भी अपने समय को ना भूले। हमे इस कहानी से यही सीख मिलती है कि हमारा जीवन भी ईश्वर की देन है हमे अपने जीवन में ईश्वर का आदर और सेवा करनी चाहीए तथा अपने माता–पिता का आदर और सम्मान भी करनी चाहीए।''

– सिल्वेनीया जांभुलकर

सन्त अल्फोन्सा

के जीवन के मुख्य कार्य

1. जीवन के छोटे–छोटे कार्यों मे भी सावधानी
2. अपने दुःख, दर्द और तिरस्कार आदियों को ईसा के प्रति प्रेम से अपने तथा परायों के विशुद्धीकरण के लिए सौप दिया।
3. भक्तिपूर्वक, पारिवारिक प्रार्थना बोलने की मुख्यता दी।
4. मेरे ईश्वर! मेरे प्रेम, मैं आपकी हूँ– इस जप को लगातार रटा करती थी।
5. कभी भी किसी के लिए वह शिकायत न करती थी। विनम्र रहने के लिए जो भी अवसर मिले, उसे अपना भाग्य समझती थी।

संत घोषित करने की धर्मप्रांतीय प्रक्रिया का उद्घाटन किया। लंबी धर्मप्रांतीय और उसके बाद की प्रेरितिक प्रक्रियाओं ने तब फल दिया जब 9 नवंबर 1984 को पवित्र पिता ने आधिकारिक तौर पर घोषणा की कि उन्होंने वीरतापूर्वक ईसाई गुणों का पालन किया है। उनकी मध्यस्थता के माध्यम से किए गए चमत्कार को भी 6 जुलाई 1985 को पोप द्वारा औपचारिक रूप से मंजूरी दी गई थी। ईश्वर ने इस पीढ़ी को इस धरती की बेटी, केरल और भारत के प्राचीन ईसाई समुदाय के बीज को इस चुनी हुई भूमि की अपनी यात्रा के दौरान सर्वोच्च पोप द्वारा अपनी मातृभूमि में संत घोषित (8 फरवरी 1986) देखने की कृपा प्रदान की है ।

सिस्टर अल्फोंसा को पोप बेनेडिक्ट XVI द्वारा संत घोषित किया गया है।

मुझे रास्ता दिखाईये।

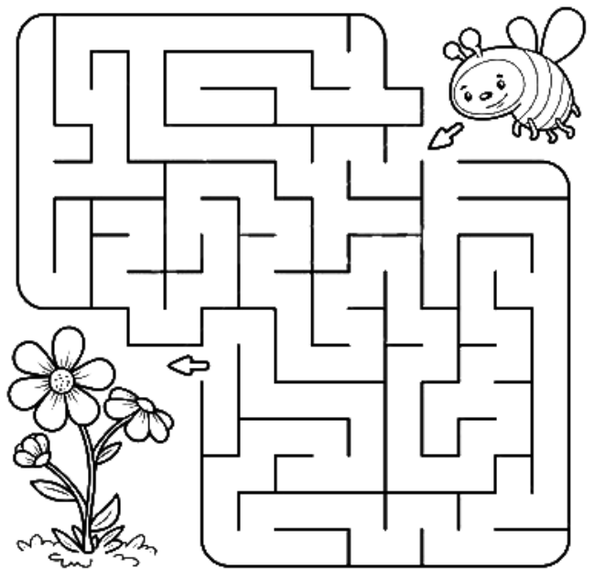

प्यार, खोया और पाया

टॉम, मैं भेड़ों को खेतों में ले जा रहा हूं," लड़के ने कहा। "खेतों में जाने से पहले सुनिश्चित कर लें कि आप खा लें। पिछली बार जब तुम बेहोश हो गए थे और पड़ोसियों ने आकर मुझे बताया था,'' उसकी माँ ने आवाज़ में चिंता के स्वर के साथ उत्तर दिया। लड़के ने अपना सिर हिलाया और अपने पिता के खेतों की ओर चला गया।

वहाँ सौ भेड़ें थीं, जो उसके पिता की संपत्ति थी। उसके पिता की हाल ही में मृत्यु हो गई थी और भेड़ें उसके प्रभार में सौंप दी गई थीं। वह प्रत्येक को नाम से जानता था। लड़के का कोई दोस्त नहीं था और इससे उसकी माँ थोड़ी चिंतित थी। लेकिन लड़का इंसानों के साथ उस तरह बातचीत नहीं कर सका जिस तरह वह जानवरों के साथ कर सकता था, खासकर अपनी भेड़ों के साथ। उसे लगा मानो वे उसकी बात सुन रहे हों; कि वे उसे समझते थे और शायद उससे प्यार भी करते थे।

रिले, राइस, ऑगस्ट, फ्रेडी, बेट्सी, गैबी, बेकी, टैमी... वह उनमें से हर एक को जानता था और उससे प्यार करता था।

टैमी का जन्म कुछ महीने पहले ही हुआ था और उसने जल्दी ही लड़के के दिल में अपनी जगह बना ली। वह बादल वाला दिन था जब लड़का आगे चला गया और भेड़ें उसके पीछे चली गईं। करीब आधे घंटे में वे खेतों में पहुंच गये. भेड़ें बिना किसी हलचल के चरने लगीं। लड़के को कुछ महसूस हुआ; उसने चारों ओर देखा,

कोई गायब था. टैमी, हाँ, यह वह थी!

तक वक्कड़ में अध्यापन में लगी रहीं। 12 अगस्त 1935 को सिस्टर अल्फोंसा ने नवप्रवर्तन में प्रवेश किया। इस दौरान उन्हें रक्तस्राव का गंभीर दौरा पड़ा और यह आशंका थी कि उन्हें वापस भेजना पड़ेगा। लेकिन उनके और समुदाय द्वारा फादर कुरियाकोस एलियास चावेरा से प्रार्थना करने के लिए आयोजित नोवेना के नौवें दिन, उन्हें चमत्कारिक रूप से ठीक कर दिया गया। उन्होंने नवप्रवर्तन पूरा किया और 12 अगस्त 1936 को अपनी धार्मिक प्रतिज्ञाओं का औपचारिक रूप से पालन किया।

सिस्टर अल्फोंसा को लगातार बीमारी और दर्द का सामना करना पड़ रहा था। वह एक ऐसे बिस्तर पर लेटी हुई थी जो असहनीय दर्द और लंबे समय तक पीड़ा से पीड़ित थी। यहाँ वह प्रभु में आनन्दित थी और उसकी महिमा कर रही थी। वह अपने और दुनिया के पवित्रीकरण के लिए और भी अधिक पीड़ा सहने के लिए तरस रही थी।

वह अपने साथियों और नौसिखियों को लगातार यह सलाह देती थी कि वे दुःख को खुशी–खुशी स्वीकार करें। इसके लिए वे बाइबिल में गेहूं के दाने का हवाला देती थीं, जिसे गिरना पड़ता है और सड़ना पड़ता है, ताकि नए अंकुर निकल सकें; इसे हमारे प्रभु के शरीर के रूप में बदलने के लिए इसे पीसना पड़ता है। वह उन्हें अंगूरों की भी याद दिलाती थीं, जिन्हें भगवान का खून बनने के लिए दाखरस बनाने के लिए कुचलना पड़ता है।

उनकी मृत्यु (28 जुलाई 1946) को लोगों ने अनदेखा कर दिया। अंतिम संस्कार सादा था और इसमें बहुत कम लोग शामिल हुए। लेकिन जल्द ही स्कूली बच्चों, जो उनसे प्यार करते थे, उनकी मध्यस्थता के माध्यम से अनुग्रह प्राप्त किया। भरणग्यानम में उनकी समाधि दूर–दूर से लोगों को आकर्षित करने वाले तीर्थयात्रा के एक महान केंद्र में बदल गई।

महामहिम कार्डिनल टिसरेंट ने 2 दिसंबर 1953 को उनके

उसके दिल में डर बैठ गया और उसने आँसू पी लिए। उसे लगा कि उसका दिल तेजी से धड़क रहा है। डर के मारे उसका पेट फूल गया और उसकी हथेलियाँ पसीने से तर हो गईं। उसने उसे कहाँ खो दिया? वह रोने लगा। उसने निन्यानवे को मैदान में छोड़ दिया और अपने कदम पीछे खींच लिए, एक बार भी यह सोचकर नहीं रुका कि वह बाकी को खो सकता है।

वह दौड़ता–भागता रहा, जब तक कि उसे कुछ दूरी पर टैमी, उसकी टैमी नहीं दिख गई। वह खुशी से उछल पड़ा और उसकी ओर चला गया। उसने उसे अपने हाथों में पकड़ लिया और अपने ऊपर लिटा लिया।

– सि. स्नेहा CMC

हर सुबह अपने आप से पाँच पंक्तियाँ बोलें

१. मैं सबसें अच्छा हूँ।
I am the best

२. मैं यह कर सकता हूँ।
I can do it

३. ईश्वर हमेशा मेरे साथ है।
God is always with me

४. मैं एक विजेता हूँ।
I am a winner

५. आज मेरा दिन है।
Today is my day

संत अल्फोंसा

सेंट अल्फोंसा का जन्म 19 अगस्त 1910 को केरल राज्य के कुडमालूर के पैरिश में जोसेफ और मेरी मुत्तथुपदथ की चौथी संतान के रूप में हुआ था। 27 अगस्त को उनका बपतिस्मा हुआ। उनका बाप्तिस्मा नाम अन्ना था और उनका घर नाम अन्नाकुट्टी था। उनके जन्म के तीन महीने बाद उनकी माँ का निधन हो गया।

अन्नाकुट्टी ने अपनी स्कूल की शिक्षा अर्पुकारा से शुरू की और मुत्तुचिरा सरकारी स्कूल चली गई जहाँ उसने अपनी मौसी अन्नाम्मा मुरिकेन की देखरेख में चौथी कक्षा से आगे की पढ़ाई जारी रखी। मौसी ने उसे बहुत प्यार से पाला, लेकिन उतनी ही सख्ती से भी। उसकी एक महत्वाकांक्षा थी कि बच्चे को एक योग्य वर के लिए एक सम्मानित गृहिणी के रूप में पाला जाए। अन्नाकुट्टी को लिस्यु की सेंट तेरेसा का दर्शन हुआ, जिनके जीवन ने उसे धार्मिक बनने के लिए प्रेरित किया। इसलिए उसने किसी भी विवाह प्रस्ताव के आगे घुटने नहीं टेके। अंत में जब उसे चर्च में सगाई करने के लिए मजबूर किया गया, तो उसने स्वेच्छा से अपने पैर को जलती हुई भूसी के राख के गड्ढे में रखकर खुद को इससे मुक्त कर लिया। इस तरह के दृढ़ प्रतिरोध के बावजूद मौसी ने उसकी इच्छा को स्वीकार किया और उसे एक कॉन्वेंट में शामिल होने की अनुमति दी।

अन्नाकुट्टी 1927 में पेंटेकोस्ट के पर्व पर भरणग्यानम में क्लैरिस्ट कॉन्वेंट में शामिल हुईं। 2 अगस्त 1928 को उन्हें अल्फोंसा नाम से व्रतों की शपथ दिलाई गई। 19 मई 1930 को उनका अभिषेक हुआ। बाद में उन्होंने उच्च शिक्षा के लिए सेंट तेरेसा स्कूल चेंगनाचेरी में दाखिला लिया, जिसे पूरा करने के बाद वे एक साल